प्रेस विज्ञप्ति

गणित विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज(के0के0वी0), लखनऊ, द्वारा दिनांकः 22.12.2018 (दिन–शनिवार) को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया गया। प्रख्यात भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय गणित दिवस प्रत्येक वर्ष 22 दिसम्बर को पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। इस अवसर पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महाविद्यालय के अध्यक्ष श्री टी0 एन0 मिश्र जी, विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के मंत्री/प्रबंधक श्री रत्नाकर शुक्ल जी गेस्ट ऑफ ऑनर प्रोफेसर रामनिवास शुक्ल, पूर्व विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, मुख्य वक्ता डॉ0 वी0 एन0 सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, बुद्ध पी0जी0 कॉलेज, कुशीनगर, महाविद्यालय के प्राचार्य श्री राकेश चन्द्र, आयोजक सचिव डॉ0 राजीव दीक्षित तथा विभागाध्यक्ष डॉ0 जे0 पी0 सिंह मंचासीन थे।

आयोजक सचिव डॉ0 राजीव दीक्षित द्वारा सभी का स्वागत तथा रामानुजन के महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। तत्पश्चात् गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 जे0 पी0 सिंह द्वारा गेस्ट ऑफ ऑनर प्रोफेसर रामनिवास शुक्ल जी को शॉल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। इसी क्रम में बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष की छात्रा शिवानी जायसवाल द्वारा महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास अयंगर रामानुजन के जीवन वृत्त एवं योगदान के बारे में बताया।

मुख्य वक्ता डॉ0 वी0 एन0 सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, बुद्ध पी0जी0 कॉलेज, कुशीनगर, द्वारा शीर्षक– **"गणित काइतिहास"** पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया गया। जिसमें उनके द्वारा प्राचीनकाल में गणित की स्थिति, गणित का उद्भव तथा भारत के गणित में दिये गये योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई। उनके द्वारा बताया गया कि अध्ययन का क्षेत्र जो गणित के इतिहास के रूप में जाना जाता है, प्रारम्भिक रूप से गणित में आविष्कारों की उत्पत्ति, अतीत के अंकन और गणितीय विधियों की एक जाँच है। सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ हैं– प्लिमपटन 322, बेबीलोन का गणित(सी0 1900ई0पू0), मॉस्कोगणितीय पेपाइरस, इजिप्ट का गणित(सी0 1850 ई0पू0), रहिंद गणितीय पेपाइरस(सी0 1650 ई0पू0) और शुल्बा के सूत्र(भारतीय गणित सी0 800 ई0पू0)। ये सभी ग्रन्थ तथा कथित पाईथागोरस की प्रमेय से संबंधित हैं, जो मूल अंकगणितीय और ज्यामिति के बाद गणितीय विकास में सबसे प्राचीन और व्यापक प्रतीत होती है। इसके बाद में ग्रीक और हेल्लेनिस्टिक गणित में इजिप्ट और बेबीलोनियन गणित का विकास हुआ, जिसने विधियों को परिष्कृत किया, विशेष रूप से प्रमाणों में गणितीय निरंतरता का परिचय, और गणित को विषय के रूप में विस्तृत किया। इसी क्रम में इस्लामी गणित ने गणित का विकास और विस्तार किया जो इन प्राचीन सभ्यताओं में ज्ञात थी। फिर गणित पर कई ग्रीक और अरबी ग्रंथों का लैटिन में अनुवाद किया गया, जिसके परिणामस्वरूप मध्यकालीन यूरोप में गणित का आगे विकास हुआ। प्राचीनकाल से मध्य युग के दौरान, गणितीय रचनात्मकता के अचानक उत्पन्न होने के कारण सदियों में ठहराव आ गया। 16वीं शताब्दी में, इटली में पुनः जागरण की शुरुआत में, यह सब अब तक की सबसे तीव्रगति के साथ हुआ और यह आज तक जारी है। प्रारम्भिक गणित के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे चित्र मिलते हैं जो मूल गणित के कुछ ज्ञान की ओर इंगित करते हैं और तारों के आधार पर समय के मापन को भी इंगित करते हैं। उदाहरण के लिए जीवाश्मविज्ञानियों ने दक्षिणी अफ्रीका की गुफाओं में ओकरेचट्टानों की खोज की जो लगभग 70,000 वर्ष पुरानी थी और खरोंचयुक्त ज्यामितिक पैटर्न से सज्ज थीं। उनके अनुसार इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि महिलाएं अपने मासिक धर्मचक्र का हिसाब रखने के लिए गिनती करती थीं, इसके लिए हड्डी या पत्थर पर 28–30 खरोंच बना दी जाती थीं, जिस पर विशिष्ट मार्कर से निशान बनाये जाते थे। इसके अलावा शिकारी और चरवाहे जब पशुओं के झुंड पर विचार करते थे तो एक, दो और अनेक की अवधारणाओं का प्रयोग करते थे, साथ ही कोई नहीं या शून्य के विचार से भी अवगत थे। उनके द्वारा रामानुजन जीटा फंक्शन पर भी चर्चा की गई।

इस कार्यक्रम में बी0एस–सी0–प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष गणित वर्ग के छात्र/छात्राओं के अतिरिक्त फैकल्टी– डॉ0 डी0 के0 श्रीवास्तव, डॉ0 संजय मिश्र, डॉ0 संजय शुक्ल, डॉ0 संजीव शुक्ल, डॉ0 के0 के0

वाजपेई, डॉ0 एन0 के0 अवस्थी, डॉ0 जी0 के0 मिश्र, डॉ0 अरविन्द कुमार तिवारी, डॉ0 ए0 पी0 वर्मा, डॉ0 मीरा वाणी, डॉ0 ओ0 पी0 बी0 शुक्ल, डॉ0 ज्योति काला आदि उपस्थित थे।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् आयेजित तकनीकी सत्र में गणित वर्ग के स्नातक छात्र/छात्राओं द्वारा शीर्षक–"**एप्लीकेशन ऑफ मैथेमेटिक्स पद वेरियस फील्डस्**" पर पॉवर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया। इस प्रतियोगिता में छात्र/छात्राओं के 19 समूहों द्वारा शीर्षक– द ब्यूटी ऑफ मैथेमेटिक्स इन नेचर, एप्लीकेशन ऑफ मैथेमेटिक्स इन म्यूजिक, मैथेमेटिक्स इन डेली लाइफ, एप्लीकेशन ऑफ मैथेमेटिक्स इन कम्प्यूटर साइंस, यूसेज ऑफ मैथेमेटिक्स इन इंटरनेट, वेदिक गणित, यूज ऑफ जीरो इन कम्प्यूटर साइंस, हिस्ट्री ऑफ एप्लीकेशन ऑफ जीरो, मैथेमेटिक्स इन फिजिक्स, मैथेमेटिक्स इन कॉमर्स, रोल ऑफ मैथेमेटिक्स इन स्टडी ऑफ ब्लैक होल, एप्लीकेशन ऑफ मैथेमेटिक्स इन इंजीनियरिंग, रोल ऑफ मैथेमेटिक्स इन बॉटनी आदि पर प्रस्तुतियाँ दी गयीं।

चार सदस्यीय निर्णायक मण्डल, जिसमें डॉ0 एन0 के0 शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन डिग्री कॉलेज, डॉ0 रमा जैन, एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग, महिला विद्यालय पी0जी कॉलेज, डॉ0 रामकुमार तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, डॉ0 अरविन्द कुमार तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, द्वारा सभी प्रस्तुतियों को सराहा गया तथा प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कारों की घोषणा की गई।

द्वारा–

डा0 जे0 पी0 सिंह
विभागाध्यक्ष, गणित विभाग,
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज(के0के0वी0), लखनऊ
इे–मेल–jaisinghjs@gmail.com
Mobile: 9838622377